

2001 में 1082 मरीजों के जांचोपरांत 199 और इस वर्ष के लिए आये 76 नमूनों में से 75 पाजीटिव आये हैं।

जायें तो जायें कहां

एड्स एक भयानक सत्य। जिसको छुपाना अगर पीड़ित की मजबुरी है तो बताना विवशता। एड्स से पीड़ित उबराना (काल्पनिक नाम) के साथ कुछ ऐसा ही तो है। पति से सौगात में मिली एड्स की जानकारी देकर उबराना न तो समाज से अलग होना चाहती है और ना ही एड्स को पालना चाहती है। ऐसी विषम परिस्थिति में सात माह पूर्व ब्याही गयी उबराना ने एड्स के अंतिम

सम्राट कुमार

स्टेज में पहुंचे अपने पति को छोड़कर समाज की भीड़ में गुम होने के लिए भरसक प्रयासरत है। हालांकि इस भयानक बीमारी से छुटकारा पाने के लिए उबराना इलाज के लिए डॉक्टरों से भी संपर्क साधती रहती है। जहांच चिकित्सक को उबराना इस राज को दबाने के लिए कसमें भी देती है।

एड्स के बारे में समाज में फैली अवधारणा के बीच इस चर्चा से ही उबराना को समाज में वहिष्कृत होने की सोंच ने काफी दहला रखा है। 18 वर्ष की उम्र एवं सात माह पूर्व ब्याही उबराना की कहानी से सामाजिक कुरीतियों एवं अवधारणा की पोल खुल जाती है। सात माह पूर्व उबराना की

शादी औराई थाना क्षेत्र के महेश स्थान निवासी मो. इजहार के 25 वर्षीय पुत्र मो. अफरोज के साथ हुई थी। शादी से पूर्व अफरोज मुंबई में सिलाई का कार्य किया करता था। गलत संगती में पड़कर अफरोज एड्स का मरीज हो गया। हालांकि उसके अक्सर बीमार रहने की जानकारी वर एवं कन्या पक्ष दोनों को थी। किंतु वंश के वट वृक्ष बढ़ाने की लालसा ने वर पक्षों एवं अफरोज की जबान न खुलने दी। वहीं कन्या पक्ष ने लड़की के बोझा को अवयस्क उम्र में ही उतारने की गरज से दोनों का निकाह करवा दिया। जिसके बाद एड्स की सौगात पति से पाकर उबराना मां बनने की खुशी न पाने की बजाए असाध्यय रोग के दुःख झेल शनैः शनैः मृत्यु की ओर अग्रसर है। वहीं उबराना का पति जिंदगी और मौत से जुझता हुआ दो पल की नसंगिक खुशी के बाद मिलने वाली असहनीय लम्बे दुःख का हिसाब शैय्या पर पड़े-पड़े कर रहा है।

2001 में 1082 मरीजों के जांचोपरांत 199 और इस वर्ष के लिए आये 76 नमूनों में से 75 पाजीटिव आय है।

जायें तो जायें कहां

इस एक भयानक सत्य। जिसको छुपाना अगर पीड़ित की मजबुरी है तो बताना विवशता। एड्स से पीड़ित उबराना ने (काल्पनिक नाम) के साथ कुछ ऐसा ही तो है। पति से सौगात में मिली एड्स की न जानकारी देकर उबराना न तो समाज से अलग होना चाहती है और ना ही एड्स को पालना 'चाहती है। ऐसी विषम परिस्थिति में सात माह र पूर्व ब्याही गयी उबराना ने एड्स के अंतिम T

सम्राट कुमार

व स्टेज में पहुंचे अपने पति को छोड़कर समाज की भीड़ में गुम होने के लिए भरसक

प्रयासरत है। हालांकि इस भयानक बीमारी से छुटकारा पाने के लिए उबराना इलाज के लिए क डॉक्टरों से भी संपर्क साधती रहती है। जहांच चिकित्सक को उबराना इस राज को दबाने के से लिए कसमें भी देती है।

ब

एड्स के बारे में समाज में फैली अवधारणा के बीच इस चर्चा से ही उबराना को समाज में वहिष्कृत होने की सोच ने से काफी दहला रखा है। 18 वर्ष की उम्र एवं सात माह पूर्व ब्याही उबराना की कहानी से सामाजिक कुरीतियों एवं अवधारणा की पोल खुल जाती है। सात माह पूर्व उबराना की

शादी औराई थाना क्षेत्र के महेश स्थान निवासी मो. इजहार के 25 वर्षीय पुत्र मो. अफरोज के साथ हुई थी। शादी से पूर्व अफरोज मुंबई में सिलाई का कार्य किया करता था। गलत संगती में पड़कर अफरोज एड्स का मरीज हो गया। हालांकि उसके अक्सर बीमार रहने की जानकारी वर एवं कन्या पक्ष दोनों को थी। किंतु वंश के वट वृक्ष बढ़ाने की लालसा ने वर पक्षों एवं अफरोज की जबान न खुलने दी। वहीं कन्या पक्ष ने लड़की के बोझा को अवयस्क उम्र

में ही उतारने की गरज से दोनों का निकाह करवा दिया। जिसके बाद एड्स की सौगात पति से पाकर उबराना मां बनने की खुशी न पाने

की बजाए असाध्यय रोग के दुःख झेल शनैः शनैः मृत्यु की ओर अग्रसर है। वहीं उबराना का पति जिंदगी और मौत से जुझता हुआ

दो पलं की नसंगिक खुशी के बाद मिलने वाली असहनीय लम्बे दुःख का हिसाब शैय्या पर पड़े- पड़े कर रहा है।